प्रस्तुतकर्ता – डॉ॰ सत्येन्द्र प्रसाद सिंह
हिन्दी विभाग, रामदयालुसिंह महाविद्यालय, मु॰

महाकविकालिदासप्रणीतं – 'मेघदूतम्'

स्नातकोत्तर द्वितीय समेस्टर, पत्र – सप्तम

संस्कृत गीतिकाव्य के मुकुटमणि के रूप में सहृदयों एवं विद्वानों के बीच लोकप्रिय मेघदूत महाकवि कालिदास की एक मनोरम कृति है। कुबेर का एक अनुचर अपनी प्रेमिका के प्रेम में लीन होने के कारण कर्त्तव्य – पालन में प्रमाद कर बैठा। कुबेर ने क्रुद्ध होकर उसे वर्त्तमान मध्यप्रदेश स्थित रामगिरि पर्वत पर एक वर्ष तक प्रिय से वियुक्त होकर रहने का दण्ड दिया। बेचारा यक्ष अपनी नगरी अलकापुरी से दूर रामगिरि के पर्वत प्रदेश में एकान्त वास के लिए विवश हुआ।

वर्षाकाल आने पर आकाश में उमड़ते मेघों को देखकर उसकी वियोग-व्यथा ऐसी उमड़ी कि वह अपनी सुध-बुध खो बैठा और उसने मेघ की अभ्यर्थना करते हुए उससे अपना दूत बनकर सुदूर अलकापुरी में स्थित अपनी विरहिणी प्रिया के पास संदेश पहुँचा देने का निवेदन किया। वह मेघ से कहता है कि यहाँ से उत्तर दिशा में चलने पर तुम मालनामक क्षेत्र में पहुँच जाओगे। वहाँ से कुछ दूर तक पश्चिम में चलने के बाद तुम उत्तर दिशा की ओर मुड़ जाना। इस प्रकार से तुम आम्रकूट पर्वत पर पहुँच जाओगे। यहाँ पर वृष्टि द्वारा दावानल को बुझाते हुए जब तुम आगे बढ़ोगे तब तुम्हें विन्ध्य पर्वत के नीचे बहती हुई नर्मदा और वेत्रवती नदी के किनारे बसी हुई विदिशा नदी के दर्शन होंगे। वहाँ से तुम उज्जयिनी को जाना। वहाँ शिप्रा का स्वाद लेकर, महाकाल की सेवा कर आगे बढ़ना। आगे गम्भीरा नदी को पार कर स्कन्द के निवास स्थान देवगिरि से होकर दशपुर पहुँचना। वहाँ से आगे चल कर ब्रह्मावर्त कुरुक्षेत्र और सरस्वती नदी से होते हुए कनखल के पास गंगा पार कर हिमालय पर चढ़ना। इसके बाद चरणन्यास आदि स्थलों पर होकर क्रौंचरंध्र से निकलते हुए उत्तर दिशा में कैलाश पर्वत पर पहुँच जाना इसी पर्वत पर तुम्हें अलकानगरी मिलेगी।

इसी प्रसंग पर मेघदूत आधारित है। कामार्त्त यक्ष ने अपनी विह्वलता से इस काव्य को विरह कातर बना दिया है। साथ ही रामगिरि से अलका तक का मार्ग बताने के क्रम में भारत के प्राकृतिक सौन्दर्य की

एक मनोरम झाँकी भी प्रस्तुत की है, इसलिए कुछ विद्वानों ने इसे भारत का काव्यमय भूगोल कहा है।

मेघदूत की विषय वस्तु है — रामगिरि से अलकापुरी की प्रकृति और जन-जीवन की सुन्दरता का चित्रण तथा विरह विदग्ध यक्ष का संदेश कथन। संदेश कथन में विरह व्यथा की रसात्मक परिणति वियोग शृंगार के रूप में है। पूर्व मेघ के प्रकृति-वर्णन में भी यक्ष के वियोग-विकल सजल नेत्र सर्वत्र दृष्टिगत होते हैं। दूसरे शब्दों में मेघदूत प्रकृति को माध्यम बनाकर लिखा गया विरह काव्य है। महाकवि कालिदास की इस कृति को दो सूत्रों से समझा जा सकता है —

(1.) कामार्त — "कामार्ता हि प्रकृति कृपणा श्चेतना चेतनेषु"
कामार्त व्यक्ति स्वभाव से चेतन-अचेतन का भेद करने में अक्षम हो जाता है इसलिए कामातुर यक्ष ने निर्जीव मेघ को भी दूत बनाने में कोई हिचक नहीं दिखलाई।

(2.) अंगनाओं का ही नहीं पुरुषों का हृदय भी आशा के धागों पर सहारे बंधा रहता है अन्यथा वह वियोग के आघात से टूटकर बिखर जाता।

विरही यक्ष के कारण इस रचना में आरम्भ से अन्त तक अनेक प्राकृतिक उपादानों पर मानवीय चेतना का आरोप मिलता है। यहाँ तक कि नदियाँ कामातुरा नायिकाएँ बन जाती हैं और मेघ रस लोलुप नायक।

मेघदूत अपनी संवेदना में आधुनिक दृष्टि से छायावादी काव्य संस्कारों वाला काव्य है। इसलिए डॉ अवधेश्वर अरुण ने इसे छायावादी काव्य संस्कारों का आदि ग्रंथ माना है। इस रचना का भावपक्ष जितना तरल रससिक्त और मर्मस्पर्शी है कलापक्ष भी उतना ही अभिनन्दनीय है। उपमा कालिदासस्य की उक्ति पद-पद पर चरितार्थ होती है। अन्त में डॉ. बलदेव उपाध्याय के शब्दों में कहना उचित होगा कि "मेघदूत वस्तुतः विरह पीड़ित उत्कंठित हृदय की मर्मभेदी वेदना है। जिसके प्रत्येक पद्य में प्रेम की विह्वलता, विवशता तथा विकलता अपने को अभिव्यक्त कर रही है। पूर्व मेघ बाह्य प्रकृति का मनोरम चित्र है तो उत्तर मेघ अन्तः प्रकृति का अनुभव पर प्रतिष्ठित अभिराम वर्णन है।